लड़कियां—आंखों का तारा

विजी श्रीनिवासन

गांव में हर जगह पानी जमा हो गया था। वह भेड़ों को चराने गांव से दूर निकल आई थी। एक भेड़ की पीठ पर टिकी वह नारंगी व बैंजनी बादलों को नीले आसमान पर तैरता देख रही थी। मक्खियां बिवाइयों से फटे उसके जख्मी पैरों पर बैठ रही थीं। वह सोचने लगी कि क्या वह अपने पिता को इस बात के लिए राजी कर लेगी कि कल वह उसे स्वास्थ्य केंद्र ले जाकर उसके जख्मों की मरहम-पट्टी करा दें।

रेशम के ककून से रेशम का तार निकालते हुए वह स्कूल के सपने देखती है। वह स्कूल जिसमें न ब्लैकबोर्ड है और न बैठने के लिए दरी। बस एक प्यारी सी मैडम हैं जिन्होंने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया। क्या वह फिर स्कूल जा सकेगी?

वह परेशान सी हो जाती है। उसकी मां ने उसे बताया कि कल उसका ब्याह है। ब्याह का क्या मतलब होता है? क्या जैसे मां का पति उसे मारता-पीटता है, उसका पति भी उसे मारेगा? क्या उसका मतलब पेट फूलकर फटने से होता है? क्या वह अपनी सहेली की तरह मर जाएगी?

शाम होने को आई। वह भूरी, पथरीली, बंजर जमीन पर सिर पर लकड़ियों का गट्ठर लादे दौड़ रही है। गट्ठर जब-तब गिरने को होता है। उसकी मां पेट से है, वह गट्ठर उठा नहीं सकती। कल घर में ईंधन न होने के कारण उसके भाई-बहन भूख से छटपटाते रहे।

अत्याचार मिटे

लड़कियों के प्रति इतना अत्याचार क्यों? क्या आर्य जब भारत आए थे तब उन्होंने अपनी बेटियों को बचाने के लिए उन पर पहरे बिठाए थे? क्या हिफ़ाजत की आड़ में औरतों को पुरुषों का गुलाम बना दिया गया था? क्या आत्मा की मुक्ति के लिए बेटों द्वारा अर्पण जरूरी था? असली पिता का पता तभी चल सकता था जब औरतों पर कड़ा पहरा हो? धर्म के ठेकेदारों ने औरतों को नापाक करार दिया और उन्हें मर्दों को लुभाने वाली और चरित्र बिगाड़ने वाली का नाम दिया। जैसे-जैसे रुपए-पैसे का महत्व बढ़ा, लड़कों को पूंजी और लड़कियों को जिम्मेदारी समझा जाने लगा।

हम अपनी बेटियों को बेटों के बराबर मानने की ओर बहुत कुछ कर सकती हैं। हम लड़की के जन्म पर लड्डू बंटवा सकती हैं। बराबर की खुशी मना सकती हैं। लड़कियां लड़कों से ज्यादा कमेरी, ज्यादा समझदार, ज्यादा जिम्मेदार और कहीं ज्यादा ममतामयी होती हैं। हम स्वास्थ्य केंद्रों पर दाइयों के प्रशिक्षण प्रोग्राम में लड़की के जन्म पर बार-बार यह बात दुहरा सकती हैं और सरकार पर गांवों में लड़कियों के लिए ज्यादा स्कूल खोलने का दबाव डाल सकती हैं।

जागरुकता पैदा करें

हमें समाज की बुराइयों को उजागर करना होगा। उसकी चर्चा बार-बार करनी होगी। बिहार में 'अदिति' नामक संस्था 200 अनौपचारिक शिक्षा केंद्र चलाती है। ऐसे और भी केंद्र देश के कई भागों में हैं और अनेकों केंद्र खोले जा सकते हैं। लड़कियों को साक्षर बनाने के साथ खेती, पशुपालन, डेरी, रेशम उद्योग, मछली पालना, खादी ग्रामोद्योग, हैंडीक्राफ्ट बनाने की शिक्षा दी जा सकती है।

हम उन्हें चित्र बनाने के लिए, मिट्टी से कलात्मक चीजें बनाने के लिए, गाने व नाटक खेलने के लिए ज्यादा मौके और सुविधाएं दे सकती हैं।

उन्हें ज्यादा लाड़-प्यार दे सकती हैं। इस तरह हम समाज की सोच बदल सकती हैं। हम ऐसा समाज बना सकती हैं जिसमें बेटियां बेटों के बराबर मां-बाप की आंखों का तारा मानी जाएं। □